भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत के सुषिर वाद्य यंत्र शहनाई एवं कलेरिनेट

हरमीक सिंह*

शोध सारांश

भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों संगीतक पद्धतियों का विलक्षण स्वरूप स्थापित है। दोनों पद्धतियों में गायन के साथ–साथ वाद्यों की विशेष भूमिका रहती है। कुछ वाद्य यंत्र ऐसे भी होते हैं जिनको संगीत के क्षेत्र में विशेष स्थान प्राप्त होता है। इस प्रकार भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत में शहनाई एवं कनेरिनेट का भी विशेष महत्व देखने को मिलता है। इन वाद्यों के बारे में विशेष रूप से चर्चा की गई है कि किस प्रकार इनकी उत्पति हुई है। संगीत के क्षेत्र में किस प्रकार इनका प्रयोग किया जाता है। वाद्यों की बनावट के बारे में बताने का प्रयास किया गया है। भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत में इन वाद्यों की वादन विधि को दर्शाया गया है कि किस प्रकार इन वाद्यों का वादन किया जाता हैं। इसके अतिरिक्त किस प्रकार वाद्यों को पकड़ा जाता है ताकि इनके वादन में किसी भी प्रकार की कोई कठिनाई न हो। इस प्रकार भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत में इन वाद्यों के वादन से सुंदरता व आनंद की अनुभूति होती है।

Keywords: भारतीय संगीत, पाश्चात्य संगीत, शहनाई, कलेरिनेट, वाद्य यंत्र।

संगीत समस्त ब्रम्हांड के कण–कण में विद्यमान है। केवल भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में संगीत का प्रभाव किसी न किसी रूप में देखने को मिलता है। प्रत्येक क्षेत्र, राज्य एवं देश का अपना एक विशेष संगीत होता है। हम सभी जानते हैं कि 'संगीत' स्वरों के माध्यम से अपने मनो भावो एवं अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने का एकमात्र साधन है। भले ही वो गायन के रूप में, वादन के रूप में या नृत्य के रूप में हो। सुषिर वाद्य यंत्रो के अन्तर्गत जिस प्रकार भारतीय संगीत में शहनाई का प्रयोग शास्त्रीय, उप शास्त्रीय एवं सुगम संगीत मे किया जाता है कि ठीक उसी प्रकार पाश्चात्य संगीत मे कनेरिनेट का प्रयोग लगभग संगीत के सभी प्रकारों के साथ किया जाता है। इस प्रकार भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत के सुषिर वाद्य यंत्र शहनाई एवं कलेरिनेट का संगीत के क्षेत्र में अपना एक विशेष स्थान है। सुषिर वाद्य यंत्रों से तात्पर्य है कि वे वाद्य यंत्र जो हवा के दबाव से बजाए जाते है। उन वाद्य यंत्रों को सुषिर वाद्य यंत्र कहा जाता है। यह दो प्रकार के होते है। एक तो वह वाद्य यंत्र जिसके मुख पर एक छिद्र होता है जिसके द्वारा हवा वाद्य के अन्दर जाती है तो ध्वनि उत्पन्न होती है। दूसरा वो वाद्य यंत्र जिनके मुख पर अलग से एक रीड़ लगाई जाती है जो हवा के द्वाव से ध्वनि उत्पन्न करने में सहायक होती है।

* शोधार्थी, संगीत विभाग, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।

शहनाई

सुषिर वाद्यों के अन्य बाकी वाद्य यंत्रों जैसे बांसुरी की तरह शहनाई भी एक वाद्य यंत्र है। शहनाई मुख्य रुप से बाहरी वाद्य यंत्र है जो आम तौर पर निजी घर में आने के स्वागत में या शादी या बच्चे के पैदा होने पर बजाई जाती है। यह कई धर्मिक उत्सवों पर बजाई जाती है। मूल रुप से, पिछले 20–वर्षों से इसे एक मशहूर लोक वाद्य यंत्र अध्कि माना जाता है, तो इस लिए शहनाई ने ड्रोन और ड्रम की टुकडी के साथ प्रतिष्ठा हासिल की है।[1] शहनाई एक बहुत ही संवेदनशील वाद्य यंत्र है। यह मुखपत्र पर होंठ और जुबां से बजाई जाती है और रेंडर करने का तरीका उँगलियों के साथ खुला या बंद होता है जो सेमीटोट और कुआटरटोन को बहुत प्रभावी और आकर्षक बनाता है।[2] शहनाई को फारसी मूल का कहा जाता है और एक दोहरी रीड वाला 6 छिद्र वाला वाद्य यंत्र बहुत नरम और मधुर ध्वनि प्रदान करती है। नादास्वरम की तरह, शहनाई भी एक अैरोफोन वाद्य यंत्र है।

पारम्परिक पृष्ठभूमि उत्पत्ति और विकास

शहनाई का आगमन ईरान से हुआ, एक हाकिम, बु अॅली सैनी ने इसका अविष्कार किया, यह बांसुरी का परिवर्तित रुप है और मुगलों के वक्त में शहनाई का नाम पाया गया लेकिन इस सिद्वांत का कोई दस्तावेजी सबूत नहीं है। बाद में इस नली में कई बदलाव आए जैसे तोता गाज़ी और आध गाज़। शहनाई या तूती एक बहुत से अन्य वाद्य यंत्र यत्रों के सामन्य नाम मुख्वाना के अंतर्गत आता है। मोहर संगीत परीजात शहनाई को एक वाद्य यंत्र के रुप में वर्णन करतें है जिसे सुनादी कहा जाता है।[3] ऐसा लगता है कि भारतीय शहनाई को मुगलों ने परिचित कराया और आई–ने–अकबर में उस्ताद शाह मुहमद एक शहनाई विशेषज्ञ के नाम का ज़िक्र करता है। अकबर के नौबत खान नौ शहनाई का प्रयोग करतें है।

सी. आर. डे के अनुसार, औबोए वाद्य यंत्र बीटिंग–रीड एरोफोन से संबध रखता है। भारत में इसे मंगल वाद्य घोषित किया गया है, जिसका अर्थ है शुभ यंत्र। शहनाई संगीत धर्मिक जुलूस में, विवाह को पवित्र करने में, हर रोज़ जनलोक के लिए मंदिर के द्वार खुलने की घोषणा करते समय, प्रमुख सांस्कृत प्रयोजनो में और सार्वजनिक कार्यों में गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते समय बजाई जाती है। यह केवल 20वी सदी कें उत्तरार्ध में है कि इस उपकरण को कला संगीत मंच के लिए उपर उठाया गया था। जिसका श्रेय पूरी तरह से उस्ताद बिस्मिल्हा खान को दिया जाता है।[4] अन्य विचार है कि पश्चिम का औबोए वाद्य यंत्र, जो कि शहनाई के समान है, चैंबर संगीत के लिए साधन के रुप में विकसित हुआ है लेकिन शहनाई आज तक मौजूद है, अनिवार्य रुप से एक खुले में बजाए जाने वाला वाद्य यंत्र है।[5]

शारीरिक बनावट

बुनियादी रुप से शहनाई के दो भाग रीड और टयूब होतें हैं। यह वाद्य यंत्र गहरे ब्लैकवुड का बना होता है और इसके अंतिम कोने में एक घंटी जडी होती है। वाद्य यंत्र की लंबाई ढेड से दो फुट की होती है।

- **रीड :** रीड संकीर्ण हवा डालने वाले अंत पर ज़डा होता है। रीड एक सख्त घास पाला जो उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में उगाया जाता है और केवल शहनाई की रीड बनाने में प्रयोग होता है। रीड एक कप पर हाथीदांत डिस्क से स्थिर होतीं हैं और एक धातू सुई द्वारा एक स्थिति में आयोजित किया जाता है।[6]
- **टयुब :** टयूब आम तौर की लकडी की बनी होती है लेकिन धातू की भी हो सकती है। इसमें कुल सात बजाने वाले छिद्र होतें हैं। स्वर को समायोजित करने के लिए एक या दो और भी हो सकतें हैं।

वादन विधि

शहनाई बजाना बहुत कठिन कार्य है। आधा स्वर और कवार्टर स्वर न केवल उंगलियों के छिद्र को बंद करके और खोलकर उत्पण किये जाते हैं बल्कि पाईप में हवा के दबाव को समायोंजित करना पड़ता है। शहनाई जब भी बजाई जाती है श्रुति नामक ड्रोन हमेशा उसके साथ होता है। यह एक अन्य यंत्र है जो देखने में शहनाई जैसा होता है लेकिन इसमें दो या तीन छिद्र होतें हैं, जो ड्रोन को वांछित पिच पर स्वर करने के लिए जो मोम से पूरी तरह या कुछ रोक दिए गए हैं। शहनाई के सात छिद्र देखने में अभिव्यक्ति की गुजांइश बहुत कम नज़र आते है लेकिन वास्तव में जिस प्रकार रीड मुखपत्र पर होंठ ज़ुबान बजती है और जिस तरह से उँगलियां छिद्रों को बंद और खोलती हैं वह शहनाई को एक बहुत संवेदनशील यंत्र बना देती है जो बहुत असरदार ढंग से अभिव्यक्त करता है।[7]

मशहूर कलाकार

कुछ मशहूर शहनाई वादकों का योगदान इस प्रकार हैः उस्ताद बिस्मिल्हा खान, छोटे खान धीरे धीरे करके शहनाई और संगीत वाद्य यंत्र को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर करने में योगदान दिया। शहनाई ने संसार में संगीत कला क्षेत्र में कई संगीतवादक प्रदान किए। जिनमें से उल्लेखनीय कलकता के अली अहमद हुसैन बाबू राओ खलादकर और शंकर राओ गायकवाड और दिल्ली के अंनत

लाल आदि। संगीतकारों की युवा पीढी के बीच, बंबई के शैलेश भागवत है जिन्होंने कुछ दर्जा हासिल किया है।

कलेरिनेट

कलेरिनेट एक पश्चिमी वाद्य यंत्र है। यह भी वुडविंड वाद्यों की श्रैणी का वाद्य यंत्र है, आमतौर पर एक छोर पर एक मुखपत्र के साथ एक लंबी टयूब होती है और दूसरे छोर पर घंटी के आकार का उद्घाटन लगा होता है। यह वाद्य यंत्र में लगभग बेलनकार के छिद्र रखता है।[8]

पारम्परिक पृष्ठभूमि उत्पत्ति और विकास

कलेरिनेट का आगमन 18वीं सदी के आंरभ मे हुआ। इस यंत्र में 18वीं सदी से लेकर अब तक कई प्रकार से बहुत अधिक मात्रा में विकास हुआ है। मुख्य विचार यह है कि कलेरिनेट वाद्य यंत्रो में से सबसे लचीला वाद्य यंत्र है।

- जर्मन के 'जौन क्रिस्टोफ डैनर' ने कलेरिनेट का आविष्कार किया। उन्होंने एक अैसा यंत्र तैयार किया जो धीमी गति में भी बजाया जा सकता था और उच्च ध्वनि में भी बजाया जा सकता है।
- कलेरिनेट के प्रसिद्व रचनाकार मिसाल के तौर पर : जे. सी. डैनर हैंडले, मौज़ारट, वैलदिर्व आदि हैं।
- जे. सी. डैनर हैंडले (1748) ने शहनाई के बारे में एक दिलचस्प कुअैचर लिखा है।[9]
- विवैल्डी आर. वी. मिस. चार्लस कलेरिनेट का एकल वादन किया करते थे जो बिल्कुल अज्ञात है।
- मोज़ार्ट ने कलेरिनेट के लिए अपनी प्रसिद्व रचनाएं लिखीं –जिसमें तकनीकी रुप से बेहद मांग में बासेट कलेरिनेट के लिए तालमेल भी शामिल है।
- लवान मूलर एक कलेरिनेट वादक और वाद्य यंत्र निर्माता थे जिन्होंने कलेरिनेट के प्रमुख मशीनों में क्रांति ला दी।[10]

शारीरिक बनावट

कलेरिनेट एक परदे का वाद्य यंत्र है जो छोटे पतले केन के टुकडे से बनी होती है। इस वाद्य यंत्र में कम से कम उच्च टोन तक एक विस्तृत श्रृंखला पाई जाती है और इसमे टोन छिद्र भी होते हैं जो धातु से ढके रहतें हैं।

- **बैरल (Barrel)** : बैरल का कार्य अपने जोड से खींच कर टोन को यत्रं तक बढाना है। इस लिए इसे प्रयोग करने वाले प्लास्टिक बैरल की लंबाई का प्रयोग करतें है।
- **मुखपत्र (Mouthpiece)** : मुखपत्र आमतौर पर सख्त रबर, प्लास्टिक, शीशे या क्रिस्टल का बना होता है। कभी कभी विभिन्न प्रकार के धातु का उपयोग उनके मुख के आधर पर मुखपत्र बनाने के

लिए किया जाता है जिसमें रीड टेबल दोनों तरफ रेल, टिप रेल और टिप के प्रतियोगी की वक्र शामिल होती है।

- **उपरी जोड़ (Upper Joint)** : उपरी जोड पर बांए हाथ के लिए परदे (Keys) होते हैं। यह परदे उन परदों से अधिक नाजुक होतीं हैं जो नीचले जोड़ में होते हैं।
- **निचला जोड़ (Lower Joint)** : नीचले जोड पर दांए हाथ के लिए एक परदा (Key) होता है। दोनो भाग एक ही टुकडे से बनाए जा सकतें हैं लेकिन दो भाग होने से इसको परिवहन में संभालने और इसकी मरम्मत में आसानी होती है।
- **घंटी (Bell)** : कलेरिनेट की घंटी कलेरिनेटका अंतिम भाग होता है जिससे रीड की कंपन गुज़रती है। घंटी निचले स्वर की ध्वनि के लिए जिम्म्देार होती है।
- **ईख (Reed)** : कलेरिनेट की रीड आम तौर पर बांस जैसी सामग्री से बनी होती है जिसे डोनक्स (donax) कहतें है और मुखपत्र के साथ जुडा होता है। रीड कलेरिनेट के सबसे महत्वपूर्ण भागों में से एक है।
- **बोर (Bore)** : कलेरिनेट के भाग कॉर्क द्वारा एक दूसरे से जुडे हुए होतें हैं। लकडी के भागों को बोर कहा जाता है। यह पूरी लंबाई में एक ही व्यास का लगभग सही सिलंडर है।[11]

कलेरिनेट की वादन विधि

बजाने की तकनीक का अर्थ आप कलेरिनेट को अपने होठों पर किस ढंग से पकडते हो और आप कलेरिनेट बजाने वाले वाद्य यंत्र में धुन भरतें है, जो सबसे सुखद अनुभव है।

- आपको कलेरिनेट मनोवेग, भावनायों की अभिव्यक्ति से बजाना चाहिए।
- कलेरिनेट की गहरी भारी धुन वह चीज़ है जो इसे अन्य श्रेणी के बीच चिनित करती है।

हाथों की स्थिति

दायें हाथ की स्थिति

- दायें हाथ की स्थिति का विकास शुरु करने की एक अच्छी स्थिति है क्योंकि यंत्र के भार को समर्थन करता है।
- दायाँ अंगुठा पहले वहां रखा जाता है जहां यह सही अनुभव करता है, अन्य उंगली की स्थिति को प्रभावित करता है। अंगुठे को 45 डिग्री पर एक कोने पर इसके लिए बने स्थान पर टिका देना चाहिए।

- अपनी बीच वाली तीन उंगलियों को टोन होल्ज़ पर सैट करें। आपकी उंगली के फटी पैड टोन होल्ज़ को सपष्ट करें, न कि सारी उंगलियो के टिप्स। उंगलियों को टोन होल्ज़ पर दबाते और दबाते रहें।
- उंगलियों के जोड हल्के से मुडे होने चाहिंए। दायें हाथ की स्थिति का आकार फैली हुई C जैसा होना चाहिए। उंगलियां लंबवत (Perpendicular) के करीब होनी चाहिंए।[12]

बायें हाथ की स्थिति

- दायें हाथ जैसे बायें हाथ की छड को दाईं ओर रखने के लिए बायें हाथ के अंगुठे को र्दज करें।
- बांई तर्जनी उंगली ना केवल उपरी जोड के पहले टोन होल पर कार्य करती है बल्कि ए–फलैट/जी के रुप में एक ओर तेज़ परदों (Keys) की तरह कार्य करती है।
- बाकी की उंगलियां कलेरिनेट के सामने सीधी नहीं होनी चाहिंए। वह हल्की सी कलाई से बचे रहें। उंगली नीचे की ओर झुकी हुई होनी चाहिए।[13]

निष्कर्ष

इस प्रकार उपरोक्त प्रस्तुत किए गए विवरण से यह ज्ञात होता है कि भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत मे इन वाद्य यंत्रों का विशेष महत्व है। फलस्वरूप संगीत को अनुशषनमई और सुंदरतापूर्वक प्रस्तुत करने के लिए इन वाद्य यंत्रों की विशेष भूमिका रहती है।

संदर्भ:

1 Shankar, Ravi, "My Music My life", Pg-15

2 Tejomayananda, Swami, " Awakening Indians to India" Pg-286

3 Pande, Alka, "Folk Music and Musical Instrument of Punjab", Pg-90

4 Wade, Bonnie C., "Music in India: The Classical Tradition:, Pg-110

5 Deva, B.C., "The Musical Instruments of Indian", Pg-38

6 Pande, "Alka' Folk Music & Musical Instruments of Punjab", Pg-90

7 Chakravorty, Dr., Sumita, "Instruments in Hindustani Classcial Music (Role and Performance)", Pg-75

8 Lyer, Padma, Transcription and instrumenta recognition of Music', Pg-149

9 http:clarinet.net/English/clainen-history.html

10 Hacker, Alan,, "Mozart and the Basset Clarinet" Pg-110

11 http//clarinet-tipp.com/clarinet-parts.html

12 http://dictionary.onmusic.org/term/722-clarinet

13 hand-psotion.html